शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-4.0
Vol.-3; issue-2 (April-June) 2026
Page No- 179-183
DOI :-10.71037/Shodhaamrit.v3i2.27
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

Author's :
Vishal Goswami
Assistant Professor, Somnath Sanskrit University, Gir, Somanath.

Corresponding Author :
Vishal Goswami
Assistant Professor, Somnath Sanskrit University, Gir, Somanath.

श्रीमद्भागवतान्तर्गत प्रह्लादस्तुतिः- एक दार्शनिक समीक्षा

सारांश (Abstract) : भारतीय धर्म, दर्शन एवं भक्ति परम्परा में श्रीमद्भागवतमहापुराण का विशिष्ट स्थान है। यह ग्रन्थ केवल पौराणिक आख्यानों का संग्रह न होकर वेदान्त, भक्ति तथा आध्यात्मिक तत्त्वज्ञान का समन्वित स्वरुप है। भागवत के सप्तम स्कन्ध में वर्णित प्रह्लादचरित्र भक्तिभाव, आत्मज्ञान, वैराग्य तथा ईश्वरनिष्ठा का अनुपम आदर्श प्रस्तुत करता है। विशेषतः भगवान् नृसिंह के समक्ष प्रह्लाद द्वारा प्रस्तुत स्तुति, जिसे "प्रह्लादस्तुति" कहा जाता है, दार्शनिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रह्लादस्तुतौ जीव, ईश्वर, माया, संसार, भक्ति, मोक्ष तथा ईश्वरकृपा जैसे गूढ़ तत्त्वों का अत्यन्त मार्मिक निरुपण प्राप्त होता है। प्रह्लाद असुरकुल में जन्म लेकर भी भगवद्भक्ति के

सर्वोच्च आदर्श को प्रस्तुत करता है। उसकी स्तुति यह सिद्ध करती है कि भगवत्प्राप्ति जाति, कुल, शक्ति अथवा बाह्याचार पर निर्भर न होकर शुद्धभक्ति एवं आत्मसमर्पण पर आधारित है। इस शोधपत्र में प्रह्लादस्तुति के दार्शनिक स्वरुप का विश्लेषण करते हुए विशेषतः भक्तिदर्शन, आत्मतत्त्व, मायातत्त्व, मोक्षदर्शन एवं ईश्वरस्वरुप का विवेचन किया गया है। साथ ही उपनिषद्, भगवद्गीता तथा वैष्णवदर्शन के आलोक में प्रह्लादस्तुति की तुलनात्मक समीक्षा भी प्रस्तुत की गई है।
मुख्यशब्दाः - प्रह्लादः, श्रीमद्भागवतम्, भक्तिः, मोक्षः, मायातत्त्वम्, नारसिंहः, वेदान्तः।

1. प्रस्तावना एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (Introduction & Historical Context) : श्रीमद्भागवत महापुराण भारतीय वांग्मय का वह दैदीप्यमान रत्न है जिसमें वेदान्त की नीरस शुष्कता भक्ति के रस से सिंचित होकर परम आल्हादकारी बन जाती है। पुराणों के लक्षणसर्गो (सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर, वंशानुचरित) के परे भागवत का मुख्य प्रतिपाद्य 'आश्रय' तत्व (परम ब्रह्म) का निरुपण है। सप्तम स्कंध के अंतर्गत हिरण्यकशिपु का वध और तदुपरांत भगवान नृसिंह की क्रोधाग्नि का शमन करने हेतु बालभक्त प्रह्लाद द्वारा की गई स्तुति (अध्याय 9, श्लोक 1-55) केवल एक पौराणिक कथा का अंग नहीं है, बल्कि यह सनातन दर्शन की तत्वमीमांसा (Metaphysics), ज्ञानमीमांसा (Epistemology) और मूल्यमीमांसा (Axiology) का

चर्मोत्कर्ष है।

जब हिरण्यकशिपु के वध के बाद भी भगवान का रौद्र रूप शांत नहीं हुआ, और ब्रह्मा, रुद्र, इन्द्र आदि देवता भयभीत होकर दूर ही खड़े रहे, यहाँ तक कि आदि-शक्ति महालक्ष्मी भी अपने स्वामी के इस अभूतपूर्व रूप को देखकर ठिठक गईं, तब ब्रह्मा जी ने प्रह्लाद को आगे किया:

प्रह्लादं प्रेषयामास ब्रह्मावस्थितमन्तिके।
तात शमयोपपेहि स्वपित्रे कुपितं प्रभुम्।। (भा.पु. 7.9.1)

एक पाँच वर्ष का बालक जब भगवान के सम्मुख जाता है, तब भगवान का वात्सल्य उमड़ पड़ता है। भगवान के करकमल का प्रह्लाद के मस्तक पर स्पर्श होते ही उनके सारे कर्म-बंधन क्षीण हो जाते हैं और वे परब्रह्म के साक्षात्कार जन्य आनंद में डूबकर 'परम दार्शनिक' के रूप में बोलते हैं।

2. शोध की समस्या एवं उद्देश्य (Statement of Problem & Objectives) : अक्सर प्रह्लाद स्तुति को केवल एक 'भक्तिपरक प्रार्थना' मान लिया जाता है, जिससे इसकी गहन दार्शनिक प्रासंगिकता ओझल हो जाती है। इस शोध का उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि प्रह्लाद स्तुति:

1. अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और शुद्धाद्वैत दर्शन के बीच एक सुदृढ़ सेतु है।
2. कर्मकांड के अहंकार और शुष्क तार्किक ज्ञान की सीमाओं को उजागर करती है।
3. मोक्ष के पारंपरिक 'व्यक्तिपरक' स्वरूप को बदलकर 'सर्वमुक्ति' और 'लोकमंगल' के सामाजिक दर्शन को स्थापित करती है।

3. तत्वमीमांसा: परब्रह्म का स्वरूप (Metaphysical Dimension of Brahman) : प्रह्लाद जी अपनी स्तुति के प्रारंभ में ही ब्रह्म की सर्वोपरिता और इंसानी बुद्धि की सीमाओं को रेखांकित करते हैं:

ब्रह्मादयः सुरगणा मुनयोऽथ सिद्धाः
सत्त्वैकतानमतयो वचसां प्रवाहैः।
आराधितुं पुरुगुणैरधुनापि पिप्रुः
किं तोष्टुमहर्हति स मे हरिरुग्रजातेः।। (भा.पु. 7.9.8)

3.1 गुणातीत और सगुण का समन्वय : प्रह्लाद जी कहते हैं कि जब ब्रह्मा, शिव और सिद्ध मुनि, जो विशुद्ध सत्त्वगुण में स्थित हैं, अपनी प्रकृष्ट बुद्धि और वाक्-प्रवाह से भी ईश्वर के संपूर्ण स्वरूप को नहीं छू पाते, तो मुझ जैसे असुर-कुल (रज-तम प्रधान) में उत्पन्न बालक की क्या सामर्थ्य?

परंतु अगले ही श्लोक में वे इस शंका का निवारण करते हैं कि भगवान को रीझाने के लिए लौकिक योग्यताओं की आवश्यकता नहीं है:

मन्ये धनाभिजनरूपतपःश्रुतौज-
स्तेजःप्रभावबलपौरुषबुद्धियोगाः।
नाराधनाय हि भवन्ति परस्य पुंसो
भक्त्या तोषोप भगवान् गजयूथपाय।। (भा.पु. 7.9.9)

यहाँ वे 12 लौकिक एवं आध्यात्मिक योग्यताओं (धन, कुल, रूप, तप, शास्त्रज्ञान, इंद्रिय-तेज, कांति, प्रभाव, शारीरिक बल, पुरुषार्थ, बुद्धि और अष्टांग योग) को ईश्वर प्राप्ति में निरर्थक घोषित करते हैं। इसका दार्शनिक तात्पर्य यह है कि परब्रह्म 'अनिरूपणीय' और 'अवाङ्मनसगोचर' (वाणी और मन से परे) हैं। उन्हें केवल 'अहैतुकी भक्ति' द्वारा ही आत्मसात किया जा सकता है, जैसे गजेंद्र को केवल उनकी करुणा और समर्पण से प्राप्त किया गया था।

3.2 कार्य-कारण संबंध और विवर्तवाद : वेदांत दर्शन का एक मुख्य प्रश्न है— 'जगत और ब्रह्म का संबंध क्या है?' प्रह्लाद इस पर अत्यंत स्पष्ट प्रकाश डालते हैं:

त्वं वायु रग्निरवनिर्वियदम्बु मात्रा
प्राणेन्द्रियाणि हृदयं चिदसि स्म सर्वम्।

मायया गुणमय्या सृजसीदमस्य
स्थित्यप्ययाय भगवन् स्वविलासमुप्य।। (भा.पु. 7.9.32)

दार्शनिक समीक्षा: प्रह्लाद जी के अनुसार पंचमहाभूत (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश), तन्मात्राएँ, प्राण, इंद्रियाँ, मन और चित्त— यह सब कुछ साक्षात भगवान ही हैं। यह वेदान्त के 'सत्कार्यवाद' का प्रतिपादन है। भगवान अपनी 'गुणमयी माया' के द्वारा इस संसार की सृष्टि, स्थिति और प्रलय करते हैं, परंतु वे स्वयं इस प्रक्रिया से अछूते (अविकारी) रहते हैं। यह विचार अद्वैत वेदांत के विवर्तवाद (ब्रह्म का अपरिवर्तित रहते हुए भी जगत रूप में भासित होना) और विशिष्टाद्वैत के परिणामवाद के बीच एक सुंदर संतुलन बनाता है।

4. जीव और माया की ज्ञानमीमांसा (Epistemology of Jiva and Maya) : प्रह्लाद स्तुति में जीव की सांसारिक स्थिति और उसके अज्ञान (अविद्या) का सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक विश्लेषण है।

```
              [परम ब्रह्म (परमात्मा)]
                        |
                  (माया शक्ति)
                        |
              +---------+---------+
                  |             |
        (अविद्या/अज्ञान)    (संसार चक्र)
                  |             |
[जीव (अहंकार)] <=========> [त्रिताप / दुख]
           |        (आसक्ति)
           +-------------------+
```

4.1 अविद्या और अहंकार का बंधन : जीव वास्तव में परब्रह्म का ही अंश है, परंतु वह संसार चक्र में क्यों भटक रहा है? प्रह्लाद जी कहते हैं: एतज्जनस्य बहुवैकल्पिकस्य देव
भ्रातुर्भ्रमत्युरुभयेन विदीर्णमुच्चैः।
संसारचक्रमुपयाततोऽतितर्पणं
तन्मे भवान् प्रयत पादमूलम्।। (भा.पु. 7.9.16)

जीव 'बहुवैकल्पिक' (विभिन्न कामनाओं और विकल्पों के जाल में फंसा हुआ) है। वह काल-चक्र और कर्म-चक्र के भयंकर भय से त्रस्त है। इसका कारण है अहंकार। जब तक जीव स्वयं को शरीर मानता है, वह प्रकृति के तीनों गुणों (सत्त्व, रज, तम) के अधीन रहकर सुखी-दुखी होता रहता है।

4.2 लौकिक उपायों की नश्वरता और क्षणभंगुरता : संसार के दुखों से बचने के लिए मनुष्य जो लौकिक उपाय करता है, प्रह्लाद जी ने उनकी दार्शनिक निरर्थकता को एक ही श्लोक में सिद्ध कर दिया है, जो संपूर्ण संस्कृत वांग्मय में अद्वितीय है: बालस्य नेह शरणं पितरौ नृसिंह
नार्तस्य चागदमुदन्वति मज्जतो नौः।
तप्तस्य तत्प्रतिविधिर्य इहाञ्जसेष्ट-
स्तावद्विभो तनुभृतां त्वदुपेक्षितानाम्।। (भा.पु. 7.9.19)

दार्शनिक व्याख्या :

- पितरौ न बालस्य शरणम्: माता-पिता बालक की रक्षा तब तक नहीं कर सकते जब तक उस पर ईश्वर की अनुकंपा न हो (उदाहरण के लिए स्वयं प्रह्लाद के पिता ही उनके वध पर उतारू थे)।
- नार्तस्य चागदम्: भयंकर असाध्य रोग से पीड़ित व्यक्ति को विश्व का सबसे महँगा डाक्टर या औषधि (अगद) तब तक नहीं बचा सकती जब तक आयु शेष न हो या प्रभु की इच्छा न हो।
- मुदन्वति मज्जतो नौः न: समुद्र में डूबते हुए व्यक्ति के पास यदि नौका (नाव) भी हो, तो भी प्रचंड झंझावात में वह नौका ही उसके डूबने का कारण बन जाती है।

निष्कर्ष: संसार के जितने भी 'प्रतिविधि' (Remedies/उपाय) हैं, वे सब सापेक्ष और क्षणभंगुर हैं। अंतिम और निरपेक्ष आश्रय केवल भगवान के चरणारविंद ही हैं।

5. साधन मीमांसा: कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वय (Sadhana Mimamsa) : भागवत दर्शन का मूल तत्व है कि भक्ति कोई अंधविश्वास या भावुकता नहीं है, बल्कि वह ज्ञान की पराकाष्ठा है।

5.1 विप्र और श्वपच (चांडाल) की तुलना : समाज में वर्ण और जाति व्यवस्था के अहंकार पर प्रह्लाद जी की यह घोषणा तत्कालीन और आधुनिक समाज के लिए एक महान क्रांतिकारी दार्शनिक विचार है:

विप्राद् द्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभ-
पादारविन्दविमुखाच्छ्वपचं वरिष्ठम्।
मन्ये तदार्पितमनोवचनेहितार्थ-
प्राणं पुनाति स कुलं न तु भूरिमानः।। (भा.पु. 7.9.10)

यदि कोई ब्राह्मण बारह गुणों (धर्म, सत्य, दम, तप, अमानित, ह्री, तितिक्षा, अनसूया, यज्ञ, दान, धृति, श्रुत) से संपन्न हो, परंतु यदि वह भगवान के चरणों से विमुख है (अर्थात उसमें समत्व और भक्ति नहीं है), तो उससे श्रेष्ठ वह श्वपच (चांडाल) है जिसने अपना मन, वचन, कर्म और प्राण ईश्वर को समर्पित कर दिए हैं। अहंकारी ब्राह्मण स्वयं का भी कल्याण नहीं कर पाता, जबकि समर्पित भक्त संपूर्ण कुल को पवित्र कर देता है।

यहाँ 'भूरिमानः' शब्द महत्वपूर्ण है। ज्ञान या जाति का अहंकार सबसे बड़ा बाधक है। भक्ति उस अहंकार का विगलन (Dissolution) करती है।

6. मूल्यमीमांसा: सर्वमुक्ति एवं वैराग्य दर्शन (Axiology and Axiom of Universal Liberation) : प्रह्लाद स्तुति का सबसे उत्कृष्ट और दार्शनिक रूप से समृद्ध भाग वह है जहाँ प्रह्लाद व्यक्तिगत मोक्ष को ठुकरा देते हैं। यह विचार बौद्ध दर्शन के 'महायान' संप्रदाय के बोधिसत्व सिद्धांत और वेदान्त के सर्वमुक्तिवाद (Universal Liberation) के अत्यंत निकट है:

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा
मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः।
नैतान् विहाय कृपणान् विमुमुक्ष एको
नान्यं त्वदस्य शरणं भ्रमतो प्रपश्ये।। (भा.पु. 7.9.44)

6.1 एकाकी मोक्ष का निषेध : संसार के अधिकांश साधक, ऋषि और मुनि अपनी व्यक्तिगत मुक्ति की कामना से युक्त होकर जनशून्य वनों (विजने) में जाकर मौन व्रत धारण कर लेते हैं। वे समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व से विमुख हो जाते हैं। परंतु प्रह्लाद कहते हैं: "मैं इन 'कृपणान्' (अज्ञानी, असहाय और दुखी संसारी जीवों) को छोड़कर अकेला मोक्ष नहीं चाहता। क्योंकि इस संसार-सागर में भटकते हुए जीवों के लिए आपके अतिरिक्त और कोई रक्षक नहीं है।"

यह श्लोक भक्ति को 'व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना' के संकुचित दायरे से निकालकर 'वैश्विक करुणा' और 'सामाजिक समरसता' के धरातल पर प्रतिष्ठित करता है।

6.2 मन का निग्रह और इन्द्रिय संयम : प्रह्लाद जी संसार के आकर्षणों को 'मरीचिका' (Mirage) के समान बताते हैं:

जिह्वैकतोऽच्युत विकर्षति मावितृप्ता
शिश्नोऽन्यतस्त्वगुदरं श्रवणं कुतश्चित्।
घ्राणोऽन्यतश्चपलदृक् क्व च कर्मशक्ति-
र्बह्व्यः सपत्न्य इव गेहपतिं लुठन्ति।। (भा.पु. 7.9.40)

दार्शनिक रूपक: यहाँ मानव मन की तुलना एक ऐसे गृहपति (घर के मालिक) से की गई है जिसकी कई पत्नियाँ (इंद्रियाँ) हैं। जिह्वा स्वाद की ओर खींचती है, जननेंद्रिय कामवासना की ओर, त्वचा स्पर्श की ओर, उदर भोजन की ओर, कान शब्दों की ओर और आँखें रूप की ओर। ये सभी इन्द्रियाँ मानव की चेतना को वैसे ही लूट लेती हैं जैसे सौतें मिलकर एक पति को। इस इंद्रिय-दासता से मुक्ति केवल 'प्रत्याहार' और 'भगवद-शरणगति' से ही संभव है।

7. विभिन्न दर्शन संप्रदायों की संगति (Alignment with Philosophical Schools) : प्रह्लाद स्तुति किसी एक संकीर्ण मत का पोषण नहीं करती, बल्कि यह भारतीय दर्शन के विभिन्न आयामों को समाहित करती है:

दार्शनिक संप्रदाय	प्रह्लाद स्तुति में दार्शनिक संगति और श्लोक का भाव
अद्वैत वेदांत (शंकर)	*'माया जवनान्तरितम्'* — ईश्वर और जीव की तात्विक एकता; जगत को माया विलास और ब्रह्म को एकमात्र सत्य स्वीकारना (श्लोक 32)।
विशिष्टाद्वैत (रामानुज)	*'शरणगति/प्रपत्ति'* — ईश्वर को अनन्त कल्याणकारी गुणों का आश्रय मानना और 'आकिंचन्य' (अपने को असहाय मानकर प्रभु शरणागत होना) भाव।
शुद्धाद्वैत (वल्लभ)	*'पुष्टि मार्ग'* — जीव पर भगवान के अनुग्रह (कृपा) को ही साधना का प्राण मानना। प्रभु का करकमल मस्तक पर रखना शुद्ध कृपा है।
सांख्य दर्शन	प्रह्लाद जी द्वारा प्रकृति के 25 तत्वों (महाभूत, इंद्रियाँ, मन आदि) का विवेचन और पुरुष (परमात्मा) को उससे परे द्रष्टा मानना।

8. आधुनिक युग में प्रह्लाद-दर्शन की प्रासंगिकता (Contemporary Relevance) : 21वीं सदी का मानव तकनीकी रुप से समृद्ध होने के बावजूद आंतरिक रूप से अत्यंत अशांत और एकाकी है। प्रह्लाद स्तुति आज के संदर्भ में निम्नलिखित तीन महत्वपूर्ण संदेश देती है:

1. **उपभोक्तावाद का प्रतिकार (Countering Consumerism):** प्रह्लाद का जीवन और उनकी स्तुति सिखाती है कि इंद्रियों की असीमित तृप्ति (Consumerism) अंततः विनाश की ओर ले जाती है, जैसा हिरण्यकशिपु के साथ हुआ। शांति 'संग्रह' में नहीं, 'समर्पण' में है।
2. **पारिस्थितिक समत्व (Ecological Consciousness):** प्रह्लाद सर्वत्र ईश्वर को देखते हैं— चाहे वह खंभा हो, शत्रु हो या प्रकृति। यह दृष्टिकोण हमें पर्यावरण और प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनाता है।
3. **मानसिक सुदृढ़ता (Psychological Resilience):** भयंकर विपरीत परिस्थितियों (विष देना, पहाड़ों से गिराना) में भी प्रह्लाद का मानसिक संतुलन डिगा नहीं। उनका दर्शन 'स्थितप्रज्ञ' का दर्शन है, जो आधुनिक अवसाद (Depression) और एंग्जायटी (Anxiety) के दौर में सर्वोत्तम मानसिक संबल प्रदान कर सकता है।

9. निष्कर्ष (Conclusion) : श्रीमद्भागवत महापुराण के अंतर्गत 'प्रह्लाद स्तुति' केवल असुरराज के दमन की कथा का अंत नहीं है, बल्कि यह अज्ञान के दमन और आत्मज्ञान के उदय का दार्शनिक घोषणापत्र है। प्रह्लाद ने भक्ति को ज्ञान की शुष्कता से और ज्ञान को कर्मकांड की जटिलता से मुक्त किया। उनकी स्तुति में जो सर्वमुक्ति की भावना है, वह भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का साक्षात सगुण विग्रह है। यह स्तुति साधक को 'अहं' से 'विभु' की ओर, और 'स्व' से 'सर्व' की ओर ले जाने वाला एक शाश्वत दार्शनिक प्रकाश-स्तंभ है।

10. संदर्भ ग्रंथ सूची (References & Bibliography) :

1. श्रीमद्भागवत महापुराण (मूल श्लोक एवं हिंदी अनुवाद), खंड 1 एवं 2, गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. शंकराचार्य, आदि गुरु, *विवेकचूडामणि,* चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली।
3. रामानुजाचार्य, *श्रीभाष्य (ब्रह्मसूत्र भाष्य),* मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
4. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, *भारतीय दर्शन (Indian Philosophy - Vol. I & II),* राजपाल एंड संस, दिल्ली।
5. बलदेव उपाध्याय, आचार्य, *पुराण विमर्श,* चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी।
6. स्वामी प्रभुपाद, ए.सी. भक्तिवेदान्त, *श्रीमद्भागवतम (सप्तम स्कंध),* भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट, मुंबई।
7. दासगुप्ता, एस.एन., *ए हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी (A History of Indian Philosophy),* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. कल्याण (विशेषांक), *'भगवत्कथांक' एवं 'भक्तचरितांक',* गीता प्रेस, गोरखपुर।
9. शर्मा, डॉ. रामविलास, *भारतीय दर्शन और मार्क्सवाद,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

•